॥ श्रीहरिः ॥

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

(तृतीय खण्ड)

[उद्योगपर्व और भीष्मपर्व]

(सचित्र, सरल हिंदी-अनुवाद)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

अनुवादक—

साहित्याचार्य पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

उद्योगपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	(सेनोद्योगपर्व)	
१-	राजा विराटकी सभामें भगवान् श्रीकृष्णका भाषण	१७
२-	बलरामजीका भाषण	२०
३-	सात्यकिके वीरोचित उद्‌गार	२२
४-	राजा द्रुपदकी सम्मति	२४
५-	भगवान् श्रीकृष्णका द्वारकागमन, विराट और द्रुपदके संदेशसे राजाओंका पाण्डवपक्षकी ओरसे युद्धके लिये आगमन	२६
६-	द्रुपदका पुरोहितको दौत्यकर्मके लिये अनुमति देना तथा पुरोहितका हस्तिनापुरको प्रस्थान	२७
७-	श्रीकृष्णका दुर्योधन तथा अर्जुन दोनोंको सहायता देना	२९
८-	शल्यका दुर्योधनके सत्कारसे प्रसन्न हो उसे वर देना और युधिष्ठिरसे मिलकर उन्हें आश्वासन देना	३३
९-	इन्द्रके द्वारा त्रिशिराका वध, वृत्रासुरकी उत्पत्ति, उसके साथ इन्द्रका युद्ध तथा देवताओंकी पराजय	३८
१०-	इन्द्रसहित देवताओंका भगवान् विष्णुकी शरणमें जाना और इन्द्रका उनके आज्ञानुसार वृत्रासुरसे संधि करके अवसर पाकर उसे मारना एवं ब्रह्महत्याके भयसे जलमें छिपना	४३
११-	देवताओं तथा ऋषियोंके अनुरोधसे राजा नहुषका इन्द्रके पदपर अभिषिक्त होना एवं काम-भोगमें आसक्त होना और चिन्तामें पड़ी हुई इन्द्राणीको बृहस्पतिका आश्वासन	४७
१२-	देवता-नहुष-संवाद, बृहस्पतिके द्वारा इन्द्राणीकी रक्षा तथा इन्द्राणीका नहुषके पास कुछ समयकी अवधि माँगनेके लिये जाना	४९
१३-	नहुषका इन्द्राणीको कुछ कालकी अवधि देना, इन्द्रका ब्रह्महत्यासे उद्धार तथा शचीद्वारा रात्रिदेवीकी उपासना	५१
१४-	उपश्रुति देवीकी सहायतासे इन्द्राणीकी इन्द्रसे भेंट	५३
१५-	इन्द्रकी आज्ञासे इन्द्राणीके अनुरोधपर नहुषका ऋषियोंको अपना वाहन बनाना तथा बृहस्पति और अग्निका संवाद	५५
१६-	बृहस्पतिद्वारा अग्नि और इन्द्रका स्तवन तथा बृहस्पति एवं लोकपालोंकी इन्द्रसे बातचीत	५८
१७-	अगस्त्यजीका इन्द्रसे नहुषके पतनका वृत्तान्त बताना	६१
१८-	इन्द्रका स्वर्गमें जाकर अपने राज्यका पालन करना, शल्यका युधिष्ठिरको आश्वासन देना और उनसे विदा लेकर दुर्योधनके यहाँ जाना	६४
१९-	युधिष्ठिर और दुर्योधनके यहाँ सहायताके लिये आयी हुई सेनाओंका संक्षिप्त विवरण	६६
	(संजययानपर्व)	
२०-	द्रुपदके पुरोहितका कौरवसभामें भाषण	६८
२१-	भीष्मके द्वारा द्रुपदके पुरोहितकी बातका समर्थन करते हुए अर्जुनकी प्रशंसा करना, इसके विरुद्ध कर्णके आक्षेपपूर्ण वचन तथा धृतराष्ट्रद्वारा भीष्मकी बातका समर्थन करते हुए दूतको सम्मानित करके विदा करना	७०
२२-	धृतराष्ट्रका संजयसे पाण्डवोंके प्रभाव और प्रतिभाका वर्णन करते हुए उसे संदेश देकर पाण्डवोंके पास भेजना	७२

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२३-	संजयका युधिष्ठिरसे मिलकर उनकी कुशल पूछना एवं युधिष्ठिरका संजयसे कौरवपक्षका कुशल-समाचार पूछते हुए उससे सारगर्भित प्रश्न करना	७७
२४-	संजयका युधिष्ठिरको उनके प्रश्नोंका उत्तर देते हुए उन्हें राजा धृतराष्ट्रका संदेश सुनानेकी प्रतिज्ञा करना	८०
२५-	संजयका युधिष्ठिरको धृतराष्ट्रका संदेश सुनाना एवं अपनी ओरसे भी शान्तिके लिये प्रार्थना करना	८२
२६-	युधिष्ठिरका संजयको इन्द्रप्रस्थ लौटानेसे ही शान्ति होना सम्भव बतलाना	८४
२७-	संजयका युधिष्ठिरको युद्धमें दोषकी सम्भावना बतलाकर उन्हें युद्धसे उपरत करनेका प्रयत्न करना	८७
२८-	संजयको युधिष्ठिरका उत्तर	९१
२९-	संजयकी बातोंका प्रत्युत्तर देते हुए श्रीकृष्णका उसे धृतराष्ट्रके लिये चेतावनी देना	९३
३०-	संजयकी विदाई तथा युधिष्ठिरका संदेश	१००
३१-	युधिष्ठिरका मुख्य-मुख्य कुरुवंशियोंके प्रति संदेश	१०६
३२-	अर्जुनद्वारा कौरवोंके लिये संदेश देना, संजयका हस्तिनापुर जा धृतराष्ट्रसे मिलकर उन्हें युधिष्ठिरका कुशल-समाचार कहकर धृतराष्ट्रके कार्यकी निन्दा करना	१०८
	(प्रजागरपर्व)	
३३-	धृतराष्ट्र-विदुर-संवाद	११२
३४-	धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीके नीतियुक्त वचन	१२४
३५-	विदुरके द्वारा केशिनीके लिये सुधन्वाके साथ विरोचनके विवादका वर्णन करते हुए धृतराष्ट्रको धर्मोपदेश	१३०
३६-	दत्तात्रेय और साध्य देवताओंके संवादका उल्लेख करके महाकुलीन लोगोंका बतलाते हुए विदुरका धृतराष्ट्रको लक्षण समझाना	१३८
३७-	धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीका हितोपदेश	१४४
३८-	विदुरजीका नीतियुक्त उपदेश	१५०
३९-	धृतराष्ट्रके प्रति विदुरजीका नीतियुक्त उपदेश	१५४
४०-	धर्मकी महत्ताका प्रतिपादन तथा ब्राह्मण आदि चारों वर्णोंके धर्मका संक्षिप्त वर्णन	१६०
	(सनत्सुजातपर्व)	
४१-	विदुरजीके द्वारा स्मरण करनेपर आये हुए सनत्सुजात ऋषिसे धृतराष्ट्रको उपदेश देनेके लिये उनकी प्रार्थना	१६३
४२-	सनत्सुजातजीके द्वारा धृतराष्ट्रके विविध प्रश्नोंका उत्तर	१६५
४३-	ब्रह्मज्ञानमें उपयोगी मौन, तप, त्याग, अप्रमाद एवं दम आदिके लक्षण तथा मदादि दोषोंका निरूपण	१७०
४४-	ब्रह्मचर्य तथा ब्रह्मका निरूपण	१७६
४५-	गुण-दोषोंके लक्षणोंका वर्णन और ब्रह्मविद्याका प्रतिपादन	१७९
४६-	परमात्माके स्वरूपका वर्णन और योगीजनोंके द्वारा उनके साक्षात्कारका प्रतिपादन	१८२
	(यानसंधिपर्व)	
४७-	पाण्डवोंके यहाँसे लौटे हुए संजयका कौरव-सभामें आगमन	१८६
४८-	संजयका कौरवसभामें अर्जुनका संदेश सुनाना	१८७
४९-	भीष्मका दुर्योधनको संधिके लिये समझाते हुए श्रीकृष्ण और अर्जुनकी महिमा बताना एवं कर्णपर आक्षेप करना, कर्णकी आत्मप्रशंसा, भीष्मके द्वारा उसका पुनः उपहास एवं द्रोणाचार्यद्वारा भीष्मजीके कथनका अनुमोदन	२००
५०-	संजयद्वारा युधिष्ठिरके प्रधान सहायकोंका वर्णन	२०४

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
५१-	भीमसेनके पराक्रमसे डरे हुए धृतराष्ट्रका विलाप	२०८
५२-	धृतराष्ट्रद्वारा अर्जुनसे प्राप्त होनेवाले भयका वर्णन	२१४
५३-	कौरवसभामें धृतराष्ट्रका युद्धसे भय दिखाकर शान्तिके लिये प्रस्ताव करना	२१५
५४-	संजयका धृतराष्ट्रको उनके दोष बताते हुए दुर्योधनपर शासन करनेकी सलाह देना	२१७
५५-	धृतराष्ट्रको धैर्य देते हुए दुर्योधनद्वारा अपने उत्कर्ष और पाण्डवोंके अपकर्षका वर्णन	२१८
५६-	संजयद्वारा अर्जुनके ध्वज एवं अश्वोंका तथा युधिष्ठिर आदिके घोड़ोंका वर्णन	२२४
५७-	संजयद्वारा पाण्डवोंकी युद्धविषयक तैयारीका वर्णन, धृतराष्ट्रका विलाप, दुर्योधनद्वारा अपनी प्रबलताका प्रतिपादन, धृतराष्ट्रका उसपर अविश्वास तथा संजयद्वारा धृष्टद्युम्नकी शक्ति एवं संदेशका कथन	२२६
५८-	धृतराष्ट्रका दुर्योधनको संधिके लिये समझाना, दुर्योधनका अहंकारपूर्वक पाण्डवोंसे युद्ध करनेका ही निश्चय तथा धृतराष्ट्रका अन्य योद्धाओंको युद्धसे भय दिखाना	२३०
५९-	संजयका धृतराष्ट्रके पूछनेपर उन्हें श्रीकृष्ण और अर्जुनके अन्त:पुरमें कहे हुए संदेश सुनाना	२३२
६०-	धृतराष्ट्रके द्वारा कौरव-पाण्डवोंकी शक्तिका तुलनात्मक वर्णन	२३५
६१-	दुर्योधनद्वारा आत्मप्रशंसा	२३७
६२-	कर्णकी आत्मप्रशंसा, भीष्मके द्वारा उसपर आक्षेप, कर्णका सभा त्यागकर जाना और भीष्मका उसके प्रति पुन: आक्षेपयुक्त वचन कहना	२३९
६३-	दुर्योधनद्वारा अपने पक्षकी प्रबलताका वर्णन करना और विदुरका दमकी महिमा बताना	२४१
६४-	विदुरका कौटुम्बिक कलहसे हानि बताते हुए धृतराष्ट्रको संधिकी सलाह देना	२४३
६५-	धृतराष्ट्रका दुर्योधनको समझाना	२४६
६६-	संजयका धृतराष्ट्रको अर्जुनका संदेश सुनाना	२४७
६७-	धृतराष्ट्रके पास व्यास और गान्धारीका आगमन तथा व्यासजीका संजयको श्रीकृष्ण और अर्जुनके सम्बन्धमें कुछ कहनेका आदेश	२४८
६८-	संजयका धृतराष्ट्रको भगवान् श्रीकृष्णकी महिमा बतलाना	२५०
६९-	संजयका धृतराष्ट्रको श्रीकृष्ण-प्राप्ति एवं तत्त्वज्ञानका साधन बताना	२५१
७०-	भगवान् श्रीकृष्णके विभिन्न नामोंकी व्युत्पत्तियोंका कथन	२५३
७१-	धृतराष्ट्रके द्वारा भगवद्गुणगान	२५४
	(भगवद्यानपर्व)	
७२-	युधिष्ठिरका श्रीकृष्णसे अपना अभिप्राय निवेदन करना, श्रीकृष्णका शान्तिदूत बनकर कौरव-सभामें जानेके लिये उद्यत होना और इस विषयमें उन दोनोंका वार्तालाप	२५५
७३-	श्रीकृष्णका युधिष्ठिरको युद्धके लिये प्रोत्साहन देना	२६३
७४-	भीमसेनका शान्तिविषयक प्रस्ताव	२६७
७५-	श्रीकृष्णका भीमसेनको उत्तेजित करना	२६८
७६-	भीमसेनका उत्तर	२७०
७७-	श्रीकृष्णका भीमसेनको आश्वासन देना	२७२
७८-	अर्जुनका कथन	२७४
७९-	श्रीकृष्णका अर्जुनको उत्तर देना	२७५
८०-	नकुलका निवेदन	२७७
८१-	युद्धके लिये सहदेव तथा सात्यकिकी सम्मति और समस्त योद्धाओंका समर्थन	२७८
८२-	द्रौपदीका श्रीकृष्णसे अपना दु:ख सुनाना और श्रीकृष्णका उसे आश्वासन देना	२७९

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
८३-	श्रीकृष्णका हस्तिनापुरको प्रस्थान, युधिष्ठिरका माता कुन्ती एवं कौरवोंके लिये संदेश तथा श्रीकृष्णको मार्गमें दिव्य महर्षियोंका दर्शन	२८३
८४-	मार्गके शुभाशुभ शकुनोंका वर्णन तथा मार्गमें लोगोंद्वारा सत्कार पाते हुए श्रीकृष्णका वृकस्थल पहुँचकर वहाँ विश्राम करना ...	२८८
८५-	दुर्योधनका धृतराष्ट्र आदिकी अनुमतिसे श्रीकृष्णके स्वागत-सत्कारके लिये मार्गमें विश्रामस्थान बनवाना	२९१
८६-	धृतराष्ट्रका भगवान् श्रीकृष्णकी अगवानी करके उन्हें भेंट देने एवं दुःशासनके महलमें ठहरानेका विचार प्रकट करना...	२९२
८७-	विदुरका धृतराष्ट्रको श्रीकृष्णकी आज्ञाका पालन करनेके लिये समझाना.....	२९४
८८-	दुर्योधनका श्रीकृष्णके विषयमें अपने विचार कहना एवं उसकी कुमन्त्रणासे कुपित हो भीष्मजीका सभासे उठ जाना	२९५
८९-	श्रीकृष्णका स्वागत, धृतराष्ट्र तथा विदुरके घरोंपर उनका आतिथ्य	२९७
९०-	श्रीकृष्णका कुन्तीके समीप जाना एवं युधिष्ठिरका कुशल-समाचार पूछकर अपने दुःखोंका स्मरण करके विलाप करती हुई कुन्तीको आश्वासन देना	३०१
९१-	श्रीकृष्णका दुर्योधनके घर जाना एवं उसके निमन्त्रणको अस्वीकार करके विदुरजीके घरपर भोजन करना	३०८
९२-	विदुरजीका धृतराष्ट्रपुत्रोंकी दुर्भावना बताकर श्रीकृष्णको उनके कौरवसभामें जानेका अनौचित्य बतलाना	३१२
९३-	श्रीकृष्णका कौरव-पाण्डवोंमें संधिस्थापनके प्रयत्नका औचित्य बताना	३१४
९४-	दुर्योधन एवं शकुनिके द्वारा बुलाये जानेपर भगवान् श्रीकृष्णका रथपर बैठकर प्रस्थान एवं कौरवसभामें प्रवेश और स्वागतके पश्चात् आसनग्रहण	३१६
९५-	कौरवसभामें श्रीकृष्णका प्रभावशाली भाषण	३२२
९६-	परशुरामजीका दम्भोद्भवकी कथाद्वारा नर-नारायणस्वरूप अर्जुन और श्रीकृष्णका महत्त्व वर्णन करना	३२७
९७-	कण्व मुनिका दुर्योधनको संधिके लिये समझाते हुए मातलिका उपाख्यान आरम्भ करना	३३१
९८-	मातलिका अपनी पुत्रीके लिये वर खोजनेके निमित्त नारदजीके साथ वरुणलोकमें भ्रमण करते हुए अनेक आश्चर्यजनक वस्तुएँ देखना	३३३
९९-	नारदजीके द्वारा पाताललोकका प्रदर्शन....	३३५
१००-	हिरण्यपुरका दिग्दर्शन और वर्णन.....	३३६
१०१-	गरुड़लोक तथा गरुड़की संतानोंका वर्णन	३३८
१०२-	सुरभि और उसकी संतानोंके साथ रसातलके सुखका वर्णन	३३९
१०३-	नागलोकके नागोंका वर्णन और मातलिका नागकुमार सुमुखके साथ अपनी कन्याको ब्याहनेका निश्चय	३४०
१०४-	नारदजीका नागराज आर्यकके सम्मुख सुमुखके साथ मातलिकी कन्याके विवाहका प्रस्ताव एवं मातलिका नारदजी, सुमुख एवं आर्यकके साथ इन्द्रके पास आकर उनके द्वारा सुमुखको दीर्घायु प्रदान कराना तथा सुमुख-गुणकेशी-विवाह	३४२
१०५-	भगवान् विष्णुके द्वारा गरुड़का गर्वभंजन तथा दुर्योधनद्वारा कण्वमुनिके उपदेशकी अवहेलना	३४४
१०६-	नारदजीका दुर्योधनको समझाते हुए धर्मराजके द्वारा विश्वामित्रजीकी परीक्षा तथा गालवके विश्वामित्रसे गुरुदक्षिणा माँगनेके लिये हठका वर्णन	३४७

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१०७-	गालवकी चिन्ता और गरुड़का आकर उन्हें आश्वासन देना	३४९
१०८-	गरुड़का गालवसे पूर्व दिशाका वर्णन करना	३५१
१०९-	दक्षिण दिशाका वर्णन	३५२
११०-	पश्चिम दिशाका वर्णन	३५४
१११-	उत्तर दिशाका वर्णन	३५६
११२-	गरुड़की पीठपर बैठकर पूर्व दिशाकी ओर जाते हुए गालवका उनके वेगसे व्याकुल होना	३५८
११३-	ऋषभ पर्वतके शिखरपर महर्षि गालव और गरुड़की तपस्विनी शाण्डिलीसे भेंट तथा गरुड़ और गालवका गुरुदक्षिणा चुकानेके विषयमें परस्पर विचार	३६०
११४-	गरुड़ और गालवका राजा ययातिके यहाँ जाकर गुरुको देनेके लिये श्यामकर्ण घोड़ोंकी याचना करना	३६१
११५-	राजा ययातिका गालवको अपनी कन्या देना और गालवका उसे लेकर अयोध्यानरेशके यहाँ जाना	३६३
११६-	हर्यश्वका दो सौ श्यामकर्ण घोड़े देकर ययाति-कन्याके गर्भसे वसुमना नामक पुत्र उत्पन्न करना और गालवका इस कन्याके साथ वहाँसे प्रस्थान	३६५
११७-	दिवोदासका ययातिकन्या माधवीके गर्भसे प्रतर्दन नामक पुत्र उत्पन्न करना	३६६
११८-	उशीनरका ययातिकन्या माधवीके गर्भसे शिबि नामक पुत्र उत्पन्न करना, गालवका उस कन्याको साथ लेकर जाना और मार्गमें गरुड़का दर्शन करना	३६८
११९-	गालवका छः सौ घोड़ोंके साथ माधवीको विश्वामित्रजीकी सेवामें देना और उनके द्वारा उसके गर्भसे अष्टक नामक पुत्रकी उत्पत्ति होनेके बाद उस कन्याको ययातिके यहाँ लौटा देना	३६९
१२०-	माधवीका वनमें जाकर तप करना तथा ययातिका स्वर्गमें जाकर सुखभोगके पश्चात् मोहवश तेजोहीन होना	३७१
१२१-	ययातिका स्वर्गलोकसे पतन और उनके दौहित्रों, पुत्री तथा गालव मुनिका उन्हें पुनः स्वर्गलोकमें पहुँचानेके लिये अपना-अपना पुण्य देनेके लिये उद्यत होना	३७३
१२२-	सत्संग एवं दौहित्रोंके पुण्यदानसे ययातिका पुनः स्वर्गारोहण	३७५
१२३-	स्वर्गलोकमें ययातिका स्वागत, ययातिके पूछनेपर ब्रह्माजीका अभिमानको ही पतनका कारण बताना तथा नारदजीका दुर्योधनको समझाना	३७६
१२४-	धृतराष्ट्रके अनुरोधसे भगवान् श्रीकृष्णका दुर्योधनको समझाना	३७९
१२५-	भीष्म, द्रोण, विदुर और धृतराष्ट्रका दुर्योधनको समझाना	३८४
१२६-	भीष्म और द्रोणका दुर्योधनको पुनः समझाना	३८६
१२७-	श्रीकृष्णको दुर्योधनका उत्तर, उसका पाण्डवोंको राज्य न देनेका निश्चय	३८७
१२८-	श्रीकृष्णका दुर्योधनको फटकारना और उसे कुपित होकर सभासे जाते देख उसे कैद करनेकी सलाह देना	३८९
१२९-	धृतराष्ट्रका गान्धारीको बुलाना और उसका दुर्योधनको समझाना	३९३
१३०-	दुर्योधनके षड्यन्त्रका सात्यकिद्वारा भंडाफोड़, श्रीकृष्णकी सिंहगर्जना तथा धृतराष्ट्र और विदुरका दुर्योधनको पुनः समझाना	३९८
१३१-	भगवान् श्रीकृष्णका विश्वरूप दर्शन कराकर कौरवसभासे प्रस्थान	४०३
१३२-	श्रीकृष्णके पूछनेपर कुन्तीका उन्हें पाण्डवोंसे कहनेके लिये संदेश देना	४०५

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१३३-	कुन्तीके द्वारा विदुलोपाख्यानका आरम्भ, विदुलाका रणभूमिसे भागकर आये हुए अपने पुत्रको कड़ी फटकार देकर पुनः युद्धके लिये उत्साहित करना	४०८
१३४-	विदुलाका अपने पुत्रको युद्धके लिये उत्साहित करना	४११
१३५-	विदुला और उसके पुत्रका संवाद—विदुलाके द्वारा कार्यमें सफलता प्राप्त करने तथा शत्रुवशीकरणके उपायोंका निर्देश	४१४
१३६-	विदुलाके उपदेशसे उसके पुत्रका युद्धके लिये उद्यत होना	४१८
१३७-	कुन्तीका पाण्डवोंके लिये संदेश देना और श्रीकृष्णका उनसे विदा लेकर उपप्लव्य नगरमें जाना	४१९
१३८-	भीष्म और द्रोणका दुर्योधनको समझाना	४२२
१३९-	भीष्मसे वार्तालाप आरम्भ करके द्रोणाचार्यका दुर्योधनको पुनः संधिके लिये समझाना	४२४
१४०-	भगवान् श्रीकृष्णका कर्णको पाण्डवपक्षमें आ जानेके लिये समझाना	४२५
१४१-	कर्णका दुर्योधनके पक्षमें रहनेके निश्चित विचारका प्रतिपादन करते हुए समरयज्ञके रूपकका वर्णन करना	४२८
१४२-	भगवान् श्रीकृष्णका कर्णसे पाण्डवपक्षकी निश्चित विजयका प्रतिपादन	४३२
१४३-	कर्णके द्वारा पाण्डवोंकी विजय और कौरवोंकी पराजय सूचित करनेवाले लक्षणों एवं अपने स्वप्नका वर्णन	४३४
१४४-	विदुरकी बात सुनकर युद्धके भावी दुष्परिणामसे व्यथित हुई कुन्तीका बहुत सोच-विचारके बाद कर्णके पास जाना	४३७
१४५-	कुन्तीका कर्णको अपना प्रथम पुत्र बताकर उससे पाण्डवपक्षमें मिल जानेका अनुरोध	४४०
१४६-	कर्णका कुन्तीको उत्तर तथा अर्जुनको छोड़कर शेष चारों पाण्डवोंको न मारनेकी प्रतिज्ञा	४४१
१४७-	युधिष्ठिरके पूछनेपर श्रीकृष्णका कौरवसभामें व्यक्त किये हुए भीष्मजीके वचन सुनाना	४४३
१४८-	द्रोणाचार्य, विदुर तथा गान्धारीके युक्तियुक्त एवं महत्त्वपूर्ण वचनोंका भगवान् श्रीकृष्णके द्वारा कथन	४४६
१४९-	दुर्योधनके प्रति धृतराष्ट्रके युक्तिसंगत वचन—पाण्डवोंको आधा राजा देनेके लिये आदेश	४४९
१५०-	श्रीकृष्णका कौरवोंके प्रति साम, दान और भेदनीतिके प्रयोगकी असफलता बताकर दण्डके प्रयोगपर जोर देना	४५२

(सैन्यनिर्याणपर्व)

१५१-	पाण्डवपक्षके सेनापतिका चुनाव तथा पाण्डव-सेनाका कुरुक्षेत्रमें प्रवेश	४५३
१५२-	कुरुक्षेत्रमें पाण्डव-सेनाका पड़ाव तथा शिविर-निर्माण	४५८
१५३-	दुर्योधनका सेनाको सुसज्जित होने और शिविर-निर्माण करनेके लिये आज्ञा देना तथा सैनिकोंकी रणयात्राके लिये तैयारी	४६०
१५४-	युधिष्ठिरका भगवान् श्रीकृष्णसे अपने समयोचित कर्तव्यके विषयमें पूछना, भगवान्‌का युद्धको ही कर्तव्य बताना तथा इस विषयमें युधिष्ठिरका संताप और अर्जुनद्वारा श्रीकृष्णके वचनोंका समर्थन	४६२
१५५-	दुर्योधनके द्वारा सेनाओंका विभाजन और पृथक्-पृथक् अक्षौहिणियोंके सेनापतियोंका अभिषेक	४६४
१५६-	दुर्योधनके द्वारा भीष्मजीका प्रधान सेनापतिके पदपर अभिषेक और कुरुक्षेत्रमें पहुँचकर शिविर-निर्माण	४६६
१५७-	युधिष्ठिरके द्वारा अपने सेनापतियोंका अभिषेक, यदुवंशियोंसहित बलरामजीका आगमन तथा पाण्डवोंसे विदा लेकर उनका तीर्थयात्राके लिये प्रस्थान	४६९

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१५८-	रुक्मीका सहायता देनेके लिये आना; परंतु पाण्डव और कौरव दोनों पक्षोंके द्वारा कोरा उत्तर पाकर लौट जाना	४७३
१५९-	धृतराष्ट्र और संजयका संवाद	४७६
	(उलूकदूतागमनपर्व)	
१६०-	दुर्योधनका उलूकको दूत बनाकर पाण्डवोंके पास भेजना और उनसे कहनेके लिये संदेश देना	४७७
१६१-	पाण्डवोंके शिविरमें पहुँचकर उलूकका भरी सभामें दुर्योधनका संदेश सुनाना	४८६
१६२-	पाण्डवपक्षकी ओरसे दुर्योधनको उसके संदेशका उत्तर	४८९
१६३-	पाँचों पाण्डवों, विराट, द्रुपद, शिखण्डी और धृष्टद्युम्नका संदेश लेकर उलूकका लौटना और उलूककी बात सुनकर दुर्योधनका सेनाको युद्धके लिये तैयार होनेका आदेश देना	४९४
१६४-	पाण्डव-सेनाका युद्धके मैदानमें जाना और धृष्टद्युम्नके द्वारा योद्धाओंकी अपने-अपने योग्य विपक्षियोंके साथ युद्ध करनेके लिये नियुक्ति	४९८
	(रथातिरथसंख्यानपर्व)	
१६५-	दुर्योधनके पूछनेपर भीष्मका कौरवपक्षके रथियों और अतिरथियोंका परिचय देना	५००
१६६-	कौरवपक्षके रथियोंका परिचय	५०३
१६७-	कौरवपक्षके रथी, महारथी और अतिरथियोंका वर्णन	५०५
१६८-	कौरवपक्षके रथियों और अतिरथियोंका वर्णन, कर्ण और भीष्मका रोषपूर्वक संवाद तथा दुर्योधनद्वारा उसका निवारण	५०७
१६९-	पाण्डवपक्षके रथी आदिका एवं उनकी महिमाका वर्णन	५१०
१७०-	पाण्डवपक्षके रथियों और महारथियोंका वर्णन तथा विराट और द्रुपदकी प्रशंसा	५१२
१७१-	पाण्डवपक्षके रथी, महारथी एवं अतिरथी आदिका वर्णन	५१३
१७२-	भीष्मका पाण्डवपक्षके अतिरथी वीरोंका वर्णन करते हुए शिखण्डी और पाण्डवोंका वध न करनेका कथन	५१६
	(अम्बोपाख्यानपर्व)	
१७३-	अम्बोपाख्यानका आरम्भ—भीष्मजीके द्वारा काशिराजकी कन्याओंका अपहरण	५१८
१७४-	अम्बाका शाल्वराजके प्रति अपना अनुराग प्रकट करके उनके पास जानेके लिये भीष्मसे आज्ञा माँगना	५२०
१७५-	अम्बाका शाल्वके यहाँ जाना और उससे परित्यक्त होकर तापसोंके आश्रममें आना, वहाँ शैखावत्य और अम्बाका संवाद	५२१
१७६-	तापसोंके आश्रममें राजर्षि होत्रवाहन और अकृतव्रणका आगमन तथा उनसे अम्बाकी बातचीत	५२४
१७७-	अकृतव्रण और परशुरामजीकी अम्बासे बातचीत	५२८
१७८-	अम्बा और परशुरामजीका संवाद, अकृतव्रणकी सलाह, परशुराम और भीष्मकी रोषपूर्ण बातचीत तथा उन दोनोंका युद्धके लिये कुरुक्षेत्रमें उतरना	५३१
१७९-	संकल्पनिर्मित रथपर आरूढ़ परशुरामजीके साथ भीष्मका युद्ध प्रारम्भ करना	५३८
१८०-	भीष्म और परशुरामका घोर युद्ध	५४०
१८१-	भीष्म और परशुरामका युद्ध	५४३
१८२-	भीष्म और परशुरामका युद्ध	५४५
१८३-	भीष्मको अष्टवसुओंसे प्रस्वापनास्त्रकी प्राप्ति	५४७
१८४-	भीष्म तथा परशुरामजीका एक-दूसरेपर शक्ति और ब्रह्मास्त्रका प्रयोग	५४८
१८५-	देवताओंके मना करनेसे भीष्मका प्रस्वापनास्त्रको प्रयोगमें न लाना तथा पितर, देवता और गंगाके आग्रहसे भीष्म	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	और परशुरामके युद्धकी समाप्ति	५५०
१८६-	अम्बाकी कठोर तपस्या	५५४
१८७-	अम्बाका द्वितीय जन्ममें पुनः तप करना और महादेवजीसे अभीष्ट वरकी प्राप्ति तथा उसका चिताकी आगमें प्रवेश	५५६
१८८-	अम्बाका राजा द्रुपदके यहाँ कन्याके रूपमें जन्म, राजा तथा रानीका उसे पुत्ररूपमें प्रसिद्ध करके उसका नाम शिखण्डी रखना	५५८
१८९-	शिखण्डीका विवाह तथा उसके स्त्री होनेका समाचार पाकर उसके श्वशुर दशार्णराजका महान् कोप	५५९
१९०-	हिरण्यवर्माके आक्रमणके भयसे घबराये हुए द्रुपदका अपनी महारानीसे संकटनिवारणका उपाय पूछना	५६१
१९१-	द्रुपदपत्नीका उत्तर, द्रुपदके द्वारा नगररक्षाकी व्यवस्था और देवाराधन तथा शिखण्डिनीका वनमें जाकर स्थूणाकर्ण नामक यक्षसे अपने दुःखनिवारणके लिये प्रार्थना करना	५६३
१९२-	शिखण्डीको पुरुषत्वकी प्राप्ति, द्रुपद और हिरण्यवर्माकी प्रसन्नता, स्थूणाकर्णको कुबेरका शाप तथा भीष्मका शिखण्डीको न मारनेका निश्चय	५६५
१९३-	दुर्योधनके पूछनेपर भीष्म आदिके द्वारा अपनी-अपनी शक्तिका वर्णन	५७०
१९४-	अर्जुनके द्वारा अपनी, अपने सहायकोंकी तथा युधिष्ठिरकी भी शक्तिका परिचय देना	५७१
१९५-	कौरव-सेनाका रणके लिये प्रस्थान	५७३
१९६-	पाण्डव-सेनाका युद्धके लिये प्रस्थान	५७४

भीष्मपर्व

(जम्बूखण्डविनिर्माणपर्व)

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१-	कुरुक्षेत्रमें उभय पक्षके सैनिकोंकी स्थिति तथा युद्धके नियमोंका निर्माण	५७७
२-	वेदव्यासजीके द्वारा संजयको दिव्य दृष्टिका दान तथा भयसूचक उत्पातोंका वर्णन	५७९
३-	व्यासजीके द्वारा अमंगलसूचक उत्पातों तथा विजयसूचक लक्षणोंका वर्णन	५८२
४-	धृतराष्ट्रके पूछनेपर संजयके द्वारा भूमिके महत्त्वका वर्णन	५८९
५-	पंचमहाभूतों तथा सुदर्शनद्वीपका संक्षिप्त वर्णन	५९०
६-	सुदर्शनके वर्ष, पर्वत, मेरुगिरि, गंगानदी तथा शशाकृतिका वर्णन	५९२
७-	उत्तर कुरु, भद्राश्ववर्ष तथा माल्यवान्का वर्णन	५९६
८-	रमणक, हिरण्यक, शृंगवान् पर्वत तथा ऐरावतवर्षका वर्णन	५९८
९-	भारतवर्षकी नदियों, देशों तथा जनपदोंके नाम और भूमिका महत्त्व	६००
१०-	भारतवर्षमें युगोंके अनुसार मनुष्योंकी आयु तथा गुणोंका निरूपण	६०४

(भूमिपर्व)

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
११-	शाकद्वीपका वर्णन	६०५
१२-	कुश, क्रौंच और पुष्कर आदि द्वीपोंका तथा राहु, सूर्य एवं चन्द्रमाके प्रमाणका वर्णन	६०८

(श्रीमद्भगवद्गीतापर्व)

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१३-	संजयका युद्धभूमिसे लौटकर धृतराष्ट्रको भीष्मकी मृत्युका समाचार सुनाना	६१२
१४-	धृतराष्ट्रका विलाप करते हुए भीष्मजीके	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	मारे जानेकी घटनाको विस्तारपूर्वक जाननेके लिये संजयसे प्रश्न करना	६१३
१५-	संजयका युद्धके वृत्तान्तका वर्णन आरम्भ करना—दुर्योधनका दुःशासनको भीष्मकी रक्षाके लिये समुचित व्यवस्था करनेका आदेश	६१९
१६-	दुर्योधनकी सेनाका वर्णन	६२०
१७-	कौरवमहारथियोंका युद्धके लिये आगे बढ़ना तथा उनके व्यूह, वाहन और ध्वज आदिका वर्णन	६२२
१८-	कौरव-सेनाका कोलाहल तथा भीष्मके रक्षकों-का वर्णन	६२५
१९-	व्यूह-निर्माणके विषयमें युधिष्ठिर और अर्जुनकी बातचीत, अर्जुनद्वारा वज्रव्यूहकी रचना, भीमसेनकी अध्यक्षतामें सेनाका आगे बढ़ना	६२७
२०-	दोनों सेनाओंकी स्थिति तथा कौरव-सेनाका अभियान	६३०
२१-	कौरव-सेनाको देखकर युधिष्ठिरका विषाद करना और 'श्रीकृष्णकी कृपासे ही विजय होती है' यह कहकर अर्जुनका उन्हें आश्वासन देना	६३२
२२-	युधिष्ठिरकी रणयात्रा, अर्जुन और भीमसेनकी प्रशंसा तथा श्रीकृष्णका अर्जुनसे कौरव-सेनाको मारनेके लिये कहना	६३४
२३-	अर्जुनके द्वारा दुर्गादेवीकी स्तुति, वरप्राप्ति और अर्जुनकृत दुर्गास्तवनके पाठकी महिमा	६३६
२४-	सैनिकोंके हर्ष और उत्साहके विषयमें धृतराष्ट्र और संजयका संवाद	६३८
२५-	**(श्रीमद्भगवद्गीतायां प्रथमोऽध्यायः)** दोनों सेनाओंके प्रधान-प्रधान वीरों एवं शंख-ध्वनिका वर्णन तथा स्वजनवधके पापसे भयभीत हुए अर्जुनका विषाद	६३९
२६-	**(श्रीमद्भगवद्गीतायां द्वितीयोऽध्यायः)** अर्जुनको युद्धके लिये उत्साहित करते हुए भगवान्‌के द्वारा नित्यानित्य वस्तुके विवेचनपूर्वक सांख्ययोग, कर्मयोग एवं स्थितप्रज्ञकी स्थिति और महिमाका प्रतिपादन	६४४
२७-	**(श्रीमद्भगवद्गीतायां तृतीयोऽध्यायः)** ज्ञानयोग और कर्मयोग आदि समस्त साधनोंके अनुसार कर्तव्यकर्म करनेकी आवश्यकताका प्रतिपादन एवं स्वधर्मपालनकी महिमा तथा कामनिरोधके उपायका वर्णन	६५६
२८-	**(श्रीमद्भगवद्गीतायां चतुर्थोऽध्यायः)** सगुण भगवान्‌के प्रभाव, निष्काम कर्मयोग तथा योगी महात्मा पुरुषोंके आचरण और उनकी महिमाका वर्णन करते हुए विविध यज्ञों एवं ज्ञानकी महिमाका वर्णन	६६८
२९-	**(श्रीमद्भगवद्गीतायां पञ्चमोऽध्यायः)** सांख्ययोग, निष्काम कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तिसहित ध्यानयोगका वर्णन	६८२
३०-	**(श्रीमद्भगवद्गीतायां षष्ठोऽध्यायः)** निष्काम कर्मयोगका प्रतिपादन करते हुए आत्मोद्धारके लिये प्रेरणा तथा मनोनिग्रहपूर्वक ध्यानयोग एवं योगभ्रष्टकी गतिका वर्णन.	६९१
३१-	**(श्रीमद्भगवद्गीतायां सप्तमोऽध्यायः)** ज्ञान-विज्ञान, भगवान्‌की व्यापकता, अन्य देवताओंकी उपासना एवं भगवान्‌को प्रभावसहित न जाननेवालोंकी निन्दा और जाननेवालोंकी महिमाका कथन	७०५
३२-	**(श्रीमद्भगवद्गीतायामष्टमोऽध्यायः)** ब्रह्म, अध्यात्म और कर्मादिके विषयमें अर्जुनके सात प्रश्न और उनका उत्तर एवं भक्तियोग तथा शुक्ल और कृष्ण मार्गोंका प्रतिपादन	७१२
३३-	**(श्रीमद्भगवद्गीतायां नवमोऽध्यायः)** ज्ञान-विज्ञान और जगत्‌की उत्पत्तिका, आसुरी और दैवी सम्पदावालोंका, प्रभावसहित भगवान्‌के स्वरूपका, सकाम-निष्काम	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	उपासनाका एवं भगवद्भक्तिकी महिमाका वर्णन	७२२
३४-	(श्रीमद्भगवद्गीतायां **दशमोऽध्यायः**) भगवान्‌की विभूति और योगशक्तिका तथा प्रभावसहित भक्तियोगका कथन, अर्जुनके पूछनेपर भगवान्‌द्वारा अपनी विभूतियोंका और योगशक्तिका पुनः वर्णन	७३८
३५-	(श्रीमद्भगवद्गीतायामेकादशोऽध्यायः) विश्वरूपका दर्शन करानेके लिये अर्जुनकी प्रार्थना, भगवान् और संजयद्वारा विश्वरूपका वर्णन, अर्जुनद्वारा भगवान्‌के विश्वरूपका देखा जाना, भयभीत हुए अर्जुनद्वारा भगवान्‌की स्तुति-प्रार्थना, भगवान्‌द्वारा विश्वरूप और चतुर्भुज-रूपके दर्शनकी महिमा और केवल अनन्यभक्तिसे ही भगवान्‌की प्राप्तिका कथन	७५६
३६-	(श्रीमद्भगवद्गीतायां **द्वादशोऽध्यायः**) साकार और निराकारके उपासकोंकी उत्तमताका निर्णय तथा भगवत्प्राप्तिके उपायका एवं भगवत्प्राप्तिवाले पुरुषोंके लक्षणोंका वर्णन	७७५
३७-	(श्रीमद्भगवद्गीतायां **त्रयोदशोऽध्यायः**) ज्ञानसहित क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ और प्रकृति-पुरुषका वर्णन	७८८
३८-	(श्रीमद्भगवद्गीतायां **चतुर्दशोऽध्यायः**) ज्ञानकी महिमा और प्रकृति-पुरुषसे जगत्‌की उत्पत्तिका, सत्त्व, रज, तम—तीनों गुणोंका, भगवत्प्राप्तिके उपायका एवं गुणातीत पुरुषके लक्षणोंका वर्णन	८०३
३९-	(श्रीमद्भगवद्गीतायां **पञ्चदशोऽध्यायः**) संसारवृक्षका, भगवत्प्राप्तिके उपायका, जीवात्माका, प्रभावसहित परमेश्वरके स्वरूपका एवं क्षर, अक्षर और पुरुषोत्तमके तत्त्वका वर्णन	८१३
४०-	(श्रीमद्भगवद्गीतायां **षोडशोऽध्यायः**) फलसहित दैवी और आसुरी सम्पदाका वर्णन तथा शास्त्रविपरीत आचरणोंको त्यागने और शास्त्रके अनुकूल आचरण करनेके लिये प्रेरणा	८२२
४१-	(श्रीमद्भगवद्गीतायां **सप्तदशोऽध्यायः**) श्रद्धाका और शास्त्रविपरीत घोर तप करनेवालोंका वर्णन, आहार, यज्ञ, तप और दानके पृथक्-पृथक् भेद तथा ॐ, तत्, सत्‌के प्रयोगकी व्याख्या	८२८
४२-	(श्रीमद्भगवद्गीतायामष्टादशोऽध्यायः) त्यागका, सांख्यसिद्धान्तका, फलसहित वर्ण-धर्मका, उपासनासहित ज्ञाननिष्ठाका, भक्तिसहित निष्काम कर्मयोगका एवं गीताके माहात्म्यका वर्णन	८३७
	(भीष्मवधपर्व)	
४३-	गीताका माहात्म्य तथा युधिष्ठिरका भीष्म, द्रोण, कृप और शल्यसे अनुमति लेकर युद्धके लिये तैयार होना	८६९
४४-	कौरव-पाण्डवोंके प्रथम दिनके युद्धका आरम्भ	८७९
४५-	उभयपक्षके सैनिकोंका द्वन्द्व-युद्ध	८८१
४६-	कौरव-पाण्डव-सेनाका घमासान युद्ध	८८७
४७-	भीष्मके साथ अभिमन्युका भयंकर युद्ध, शल्यके द्वारा उत्तरकुमारका वध और श्वेतका पराक्रम	८९०
४८-	श्वेतका महाभयंकर पराक्रम और भीष्मके द्वारा उसका वध	८९५
४९-	शंखका युद्ध, भीष्मका प्रचण्ड पराक्रम तथा प्रथम दिनके युद्धकी समाप्ति	९०३
५०-	युधिष्ठिरकी चिन्ता, भगवान् श्रीकृष्णद्वारा आश्वासन, धृष्टद्युम्नका उत्साह तथा द्वितीय दिनके युद्धके लिये क्रौंचारुणव्यूहका	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	निर्माण	९०७
५१-	कौरव-सेनाकी व्यूह-रचना तथा दोनों दलोंमें शंखध्वनि और सिंहनाद	९११
५२-	भीष्म और अर्जुनका युद्ध	९१३
५३-	धृष्टद्युम्न तथा द्रोणाचार्यका युद्ध	९१८
५४-	भीमसेनका कलिंगों और निषादोंसे युद्ध, भीमसेनके द्वारा शक्रदेव, भानुमान् और केतुमान्‌का वध तथा उनके बहुत-से सैनिकोंका संहार	९२१
५५-	अभिमन्यु और अर्जुनका पराक्रम तथा दूसरे दिनके युद्धकी समाप्ति	९२९
५६-	तीसरे दिन—कौरव-पाण्डवोंकी व्यूह-रचना तथा युद्धका आरम्भ	९३२
५७-	उभयपक्षकी सेनाओंका घमासान युद्ध	९३४
५८-	पाण्डव-वीरोंका पराक्रम, कौरव-सेनामें भगदड़ तथा दुर्योधन और भीष्मका संवाद	९३६
५९-	भीष्मका पराक्रम, श्रीकृष्णका भीष्मको मारनेके लिये उद्यत होना, अर्जुनकी प्रतिज्ञा और उनके द्वारा कौरव-सेनाकी पराजय, तृतीय दिवसके युद्धकी समाप्ति	९३९
६०-	चौथे दिन—दोनों सेनाओंका व्यूह-निर्माण तथा भीष्म और अर्जुनका द्वैरथ-युद्ध	९५१
६१-	अभिमन्युका पराक्रम और धृष्टद्युम्नद्वारा शलके पुत्रका वध	९५४
६२-	धृष्टद्युम्न और शल्य आदि दोनों पक्षके वीरोंका युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार	९५७
६३-	युद्धस्थलमें प्रचण्ड पराक्रमकारी भीमसेनका भीष्मके साथ युद्ध तथा सात्यकि और भूरिश्रवाकी मुठभेड़	९६१
६४-	भीमसेन और घटोत्कचका पराक्रम, कौरवोंकी पराजय तथा चौथे दिनके युद्धकी समाप्ति	९६४
६५-	धृतराष्ट्र-संजय-संवादके प्रसंगमें दुर्योधनके द्वारा पाण्डवोंकी विजयका कारण पूछनेपर भीष्मका ब्रह्माजीके द्वारा की हुई भगवत्-स्तुतिका कथन	९६९
६६-	नारायणावतार श्रीकृष्ण एवं नरावतार अर्जुनकी महिमाका प्रतिपादन	९७५
६७-	भगवान् श्रीकृष्णकी महिमा	९७८
६८-	ब्रह्मभूतस्तोत्र तथा श्रीकृष्ण और अर्जुनकी महत्ता	९८०
६९-	कौरवोंद्वारा मकरव्यूह तथा पाण्डवोंद्वारा श्येन-व्यूहका निर्माण एवं पाँचवें दिनके युद्धका आरम्भ	९८१
७०-	भीष्म और भीमसेनका घमासान युद्ध	९८४
७१-	भीष्म, अर्जुन आदि योद्धाओंका घमासान युद्ध	९८६
७२-	दोनों सेनाओंका परस्पर घोर युद्ध	९९०
७३-	विराट-भीष्म, अश्वत्थामा-अर्जुन, दुर्योधन-भीमसेन तथा अभिमन्यु और लक्ष्मणके द्वन्द्व-युद्ध	९९२
७४-	सात्यकि और भूरिश्रवाका युद्ध, भूरिश्रवाद्वारा सात्यकिके दस पुत्रोंका वध, अर्जुनका पराक्रम तथा पाँचवें दिनके युद्धका उपसंहार	९९६
७५-	छठे दिनके युद्धका आरम्भ, पाण्डव तथा कौरव-सेनाका क्रमशः मकरव्यूह एवं क्रौंचव्यूह बनाकर युद्धमें प्रवृत्त होना	९९९
७६-	धृतराष्ट्रकी चिन्ता	१००१
७७-	भीमसेन, धृष्टद्युम्न तथा द्रोणाचार्यका पराक्रम	१००३
७८-	उभय पक्षकी सेनाओंका संकुलयुद्ध	१००९
७९-	भीमसेनके द्वारा दुर्योधनकी पराजय, अभिमन्यु और द्रौपदीपुत्रोंका धृतराष्ट्रपुत्रोंके साथ युद्ध तथा छठें दिनके युद्धकी समाप्ति	१०११
८०-	भीष्मद्वारा दुर्योधनको आश्वासन तथा सातवें दिनके युद्धके लिये कौरव-सेनाका प्रस्थान	१०१६

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
८१-	सातवें दिनके युद्धमें कौरव-पाण्डव-सेनाओंका मण्डल और वज्रव्यूह बनाकर भीषण संघर्ष	१०१९
८२-	श्रीकृष्ण और अर्जुनसे डरकर कौरव-सेनामें भगदड़, द्रोणाचार्य और विराटका युद्ध, विराट-पुत्र शंखका वध, शिखण्डी और अश्वत्थामाका युद्ध, सात्यकिके द्वारा अलम्बुषकी पराजय, धृष्टद्युम्नके द्वारा दुर्योधनकी हार तथा भीमसेन और कृतवर्माका युद्ध	१०२३
८३-	इरावान्‌के द्वारा विन्द और अनुविन्दकी पराजय, भगदत्तसे घटोत्कचका हारना तथा मद्रराजपर नकुल और सहदेवकी विजय	१०२७
८४-	युधिष्ठिरसे राजा श्रुतायुका पराजित होना, युद्धमें चेकितान और कृपाचार्यका मूर्छित होना, भूरिश्रवासे धृष्टकेतुका और अभिमन्युसे चित्रसेन आदिका पराजित होना एवं सुशर्मा आदिसे अर्जुनका युद्धारम्भ	१०३१
८५-	अर्जुनका पराक्रम, पाण्डवोंका भीष्मपर आक्रमण, युधिष्ठिरका शिखण्डीको उपालम्भ और भीमका पुरुषार्थ	१०३४
८६-	भीष्म और युधिष्ठिरका युद्ध, धृष्टद्युम्न और सात्यकिके साथ विन्द और अनुविन्दका संग्राम, द्रोण आदिका पराक्रम और सातवें दिनके युद्धकी समाप्ति	१०३९
८७-	आठवें दिन व्यूहबद्ध कौरव-पाण्डव-सेनाओंकी रणयात्रा और उनका परस्पर घमासान युद्ध	१०४३
८८-	भीष्मका पराक्रम, भीमसेनके द्वारा धृतराष्ट्रके आठ पुत्रोंका वध तथा दुर्योधन और भीष्मकी युद्धविषयक बातचीत	१०४५
८९-	कौरव-पाण्डव-सेनाका घमासान युद्ध और भयानक जनसंहार	१०४८

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
९०-	इरावान्‌के द्वारा शकुनिके भाइयोंका तथा राक्षस अलम्बुषके द्वारा इरावान्‌का वध	१०५१
९१-	घटोत्कच और दुर्योधनका भयानक युद्ध	१०५७
९२-	घटोत्कचका दुर्योधन एवं द्रोण आदि प्रमुख वीरोंके साथ भयंकर युद्ध	१०५९
९३-	घटोत्कचकी रक्षाके लिये आये हुए भीम आदि शूरवीरोंके साथ कौरवोंका युद्ध और उनका पलायन	१०६२
९४-	दुर्योधन और भीमसेनका एवं अश्वत्थामा और राजा नीलका युद्ध तथा घटोत्कचकी मायासे मोहित होकर कौरव-सेनाका पलायन	१०६६
९५-	दुर्योधनके अनुरोध और भीष्मजीकी आज्ञासे भगदत्तका घटोत्कच, भीमसेन और पाण्डव-सेनाके साथ घोर युद्ध	१०६९
९६-	इरावान्‌के वधसे अर्जुनका दुःखपूर्ण उद्‌गार, भीमसेनके द्वारा धृतराष्ट्रके नौ पुत्रोंका वध, अभिमन्यु और अम्बष्ठका युद्ध, युद्धकी भयानक स्थितिका वर्णन तथा आठवें दिनके युद्धका उपसंहार	१०७५
९७-	दुर्योधनका अपने मन्त्रियोंसे सलाह करके भीष्मसे पाण्डवोंको मारने अथवा कर्णको युद्धके लिये आज्ञा देनेका अनुरोध करना	१०८०
९८-	भीष्मका दुर्योधनको अर्जुनका पराक्रम बताना और भयंकर युद्धके लिये प्रतिज्ञा करना तथा प्रातःकाल दुर्योधनके द्वारा भीष्मकी रक्षाकी व्यवस्था	१०८३
९९-	नवें दिनके युद्धके लिये उभयपक्षकी सेनाओंकी व्यूह-रचना और उनके घमासान युद्धका आरम्भ तथा विनाशसूचक उत्पातोंका वर्णन	१०८७

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१००-	द्रौपदीके पाँचों पुत्रों और अभिमन्युका राक्षस अलम्बुषके साथ घोर युद्ध एवं अभिमन्युके द्वारा नष्ट होती हुई कौरव-सेनाका युद्धभूमिसे पलायन	१०८९
१०१-	अभिमन्युके द्वारा अलम्बुषकी पराजय, अर्जुनके साथ भीष्मका तथा कृपाचार्य, अश्वत्थामा और द्रोणाचार्यके साथ सात्यकिका युद्ध	१०९३
१०२-	द्रोणाचार्य और सुशर्माके साथ अर्जुनका युद्ध तथा भीमसेनके द्वारा गजसेनाका संहार	१०९७
१०३-	उभय पक्षकी सेनाओंका घमासान युद्ध और रक्तमयी रणनदीका वर्णन	१०९९
१०४-	अर्जुनके द्वारा त्रिगर्तोंकी पराजय, कौरव-पाण्डव सैनिकोंका घोर युद्ध, अभिमन्युसे चित्रसेनकी, द्रोणसे द्रुपदकी और भीमसेनसे बाह्लीककी पराजय तथा सात्यकि और भीष्मका युद्ध	११०२
१०५-	दुर्योधनका दुःशासनको भीष्मकी रक्षाके लिये आदेश, युधिष्ठिर और नकुल-सहदेवके द्वारा शकुनिकी घुड़सवार-सेनाकी पराजय तथा शल्यके साथ उन सबका युद्ध	११०५
१०६-	भीष्मके द्वारा पराजित पाण्डव-सेनाका पलायन और भीष्मको मारनेके लिये उद्यत हुए श्रीकृष्णको अर्जुनका रोकना	११०८
१०७-	नवें दिनके युद्धकी समाप्ति, रातमें पाण्डवोंकी गुप्त मन्त्रणा तथा श्रीकृष्णसहित पाण्डवोंका भीष्मसे मिलकर उनके वधका उपाय जानना	१११४
१०८-	दसवें दिन उभयपक्षकी सेनाका रणके लिये प्रस्थान तथा भीष्म और शिखण्डीका समागम एवं अर्जुनका शिखण्डीको भीष्मका वध करनेके लिये उत्साहित करना	११२१

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१०९-	भीष्म और दुर्योधनका संवाद तथा भीष्मके द्वारा लाखों सैनिकोंका संहार	११२६
११०-	अर्जुनके प्रोत्साहनसे शिखण्डीका भीष्मपर आक्रमण और दोनों सेनाओंके प्रमुख वीरोंका परस्पर युद्ध तथा दुःशासनका अर्जुनके साथ घोर युद्ध	११२९
१११-	कौरव-पाण्डवपक्षके प्रमुख महारथियोंके द्वन्द्व-युद्धका वर्णन	११३२
११२-	द्रोणाचार्यका अश्वत्थामाको अशुभ शकुनोंकी सूचना देते हुए उसे भीष्मकी रक्षाके लिये धृष्टद्युम्नसे युद्ध करनेका आदेश देना	११३६
११३-	कौरवपक्षके दस प्रमुख महारथियोंके साथ अकेले घोर युद्ध करते हुए भीमसेनका अद्भुत पराक्रम	११३९
११४-	कौरवपक्षके प्रमुख महारथियोंके साथ युद्धमें भीमसेन और अर्जुनका अद्भुत पुरुषार्थ	११४२
११५-	भीष्मके आदेशसे युधिष्ठिरका उनपर आक्रमण तथा कौरव-पाण्डव सैनिकोंका भीषण युद्ध	११४६
११६-	कौरव-पाण्डव महारथियोंके द्वन्द्व-युद्धका वर्णन तथा भीष्मका पराक्रम	११४८
११७-	उभय पक्षकी सेनाओंका युद्ध, दुःशासनका पराक्रम तथा अर्जुनके द्वारा भीष्मका मूर्च्छित होना	११५४
११८-	भीष्मका अद्भुत पराक्रम करते हुए पाण्डव-सेनाका भीषण संहार	११५८
११९-	कौरवपक्षके प्रमुख महारथियोंद्वारा सुरक्षित होनेपर भी अर्जुनका भीष्मको रथसे गिराना, शरशय्यापर स्थित भीष्मके समीप हंसरूपधारी ऋषियोंका आगमन एवं उनके कथनसे भीष्मका उत्तरायणकी प्रतीक्षा करते हुए प्राण धारण करना	११६१

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१२०-	भीष्मजीकी महत्ता तथा अर्जुनके द्वारा भीष्मको तकिया देना एवं उभय पक्षकी सेनाओंका अपने शिविरमें जाना और श्रीकृष्ण-युधिष्ठिर-संवाद	११६९
१२१-	अर्जुनका दिव्य जल प्रकट करके भीष्मजीकी प्यास बुझाना तथा भीष्मजीका अर्जुनकी प्रशंसा करते हुए दुर्योधनको संधिके लिये समझाना	११७४
१२२-	भीष्म और कर्णका रहस्यमय संवाद	११७९

चित्र-सूची

सादा

१- दुर्योधन और अर्जुनका श्रीकृष्णसे युद्धके लिये सहायता माँगना ३०
२- नहुषका स्वर्गसे पतन ६२
३- आकाशचारी भगवान् सूर्यदेव ९४
४- विदुर और धृतराष्ट्र ११३
५- प्रह्लादजीका न्याय १३४
६- आत्रेय मुनि और साध्यगण १३४
७- श्रीसनत्सुजात और महाराज धृतराष्ट्र १६४
८- धृतराष्ट्रकी सभामें संजय पाण्डवोंका संदेश सुना रहे हैं २१२
९- भीमसेनका बल बखानते हुए धृतराष्ट्रका विलाप २१२
१०- धृतराष्ट्रके द्वारा श्रीकृष्णका स्वागत २९९
११- श्रीकृष्णका कौरव-सभामें प्रवेश ३१९
१४- ययातिका स्वर्गारोहण ३७७
१५- दुर्योधनको गान्धारीकी फटकार ३९५
१६- भगवान् श्रीकृष्ण कर्णको समझा रहे हैं .. ४२६
१७- पाण्डवोंके डेरेमें बलरामजी ४७१
१८- पाण्डवोंकी विशाल सेना ४९९
१९- भीष्म-दुर्योधन-संवाद ५०२
२०- पाण्डव-सेनापति धृष्टद्युम्न ५१४
२१- भीष्म और परशुरामके युद्धमें नारदजीद्वारा बीच-बचाव ५५३
२२- शरणागत अर्जुन ६४४
२३- पंचमहायज्ञ ६६०
२४- अर्जुनके प्रति भगवान्‌का विराट्‌रूप-प्रदर्शन ७६१
२५- भगवान्‌के द्वारा भक्तका संसारसागरसे उद्धार ७७८
२६- चार अवस्था ७९३
२७- संसार-वृक्ष ८१५
२८- मोह-नाश ८६६
२९- श्रीकृष्ण एवं भाइयोंसहित युधिष्ठिरका भीष्मको प्रणाम करके उनसे युद्धके लिये आज्ञा माँगना ८७१
३०- भीमसेन और भीष्मका युद्ध ९८७
३१- अभिमन्युका युद्ध-कौशल ९९४
३२- भीमसेनके बाणसे मूर्च्छित दुर्योधन १०१४
३३- अर्जुनका व्यूहबद्ध कौरव-सेनाकी ओर श्रीकृष्णका ध्यान आकृष्ट करना १०२१
३४- आकाशमें स्थित हुए घटोत्कचकी गर्जना और दुर्योधनके साथ उसका युद्ध १०६३
३५- भीष्मजीका शिखण्डीसे युद्ध न करनेकी इच्छा प्रकट करना ११२५
३६- अर्जुनका बाणद्वारा पृथ्वीसे जल प्रकट करके भीष्मजीको पिलाना ११७६